NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 20-03-2026

विषय सूची

भारत का ड्रोन निर्माण में आत्मनिर्भरता हेतु प्रयास

भारत की जैव-अर्थव्यवस्था(BioEconomy) 2030 तक 300 अरब डॉलर के लक्ष्य की ओर अग्रसर

भारत का खेल उपकरण निर्माण क्षेत्र

संक्षिप्त समाचार

साउथ पार्स(South Pars) और रस लाफ़ान(Ras Laffan)

लचीलापन एवं निर्यात सुविधा हेतु लॉजिस्टिक्स हस्तक्षेप (RELIEF) योजना

लघु जलविद्त विकास योजना

विश्व खुशी रिपोर्ट 2026

भारत का ड्रोन निर्माण में आत्मनिर्भरता हेतु प्रयास

संदर्भ

- राष्ट्रीय रक्षा उद्योग सम्मेलन (2026) में भारत के रक्षा मंत्री ने इस बात पर बल दिया कि भारत को अपनी रक्षा तैयारियों को सुदृढ़ करने हेतु आत्मनिर्भर ड्रोन निर्माण पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना चाहिए।

परिचय

- मानवरहित हवाई वाहन (UAV) अथवा मानवरहित विमान प्रणाली (UAS), जिसे सामान्यतः ड्रोन कहा जाता है, ऐसा विमान है जिसमें कोई मानव पायलट, चालक दल या यात्री नहीं होता। इसे या तो दूरस्थ रूप से नियंत्रित किया जाता है अथवा यह स्वायत्त रूप से संचालित होता है।
- उद्योग अनुमानों के अनुसार, वैश्विक ड्रोन बाज़ार का मूल्य 2025 में 30 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक है और 2030 तक यह 90–100 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने की संभावना है। इसका प्रमुख कारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), स्वचालन और 5G एकीकरण का तीव्र अपनाना है।
- **भारत में ड्रोन पारिस्थितिकी तंत्र** : फरवरी 2026 तक भारत ने एक विनियमित ड्रोन पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित किया है जिसमें:
  - 38,500+ पंजीकृत ड्रोन (UIN)
  - 39,890 डीजीसीए-प्रमाणित रिमोट पायलट
  - 244 अनुमोदित प्रशिक्षण संस्थान शामिल हैं।
  - भारत में ड्रोन को प्रमुख सरकारी योजनाओं में एकीकृत किया गया है, जैसे स्वामित्व योजना (SVAMITVA) और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)।

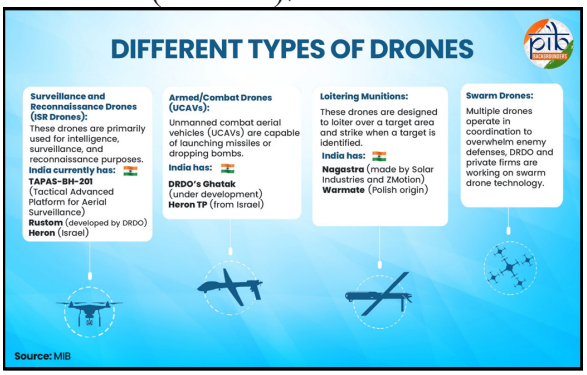

आधुनिक युद्ध में ड्रोन की केंद्रीय भूमिका

- **सामरिक श्रेष्ठता :** ड्रोन उच्च-सटीकता हमले की क्षमता प्रदान करते हैं, जिससे लक्षित अभियानों को न्यूनतम पार्श्विक क्षति के साथ संपन्न किया जा सकता है।
  - ये उच्च-जोखिम वाले क्षेत्रों में प्रत्यक्ष सैनिक संलग्नता की आवश्यकता समाप्त कर मानव जीवन के जोखिम को उल्लेखनीय रूप से कम करते हैं।
- **निगरानी एवं खुफ़िया जानकारी :**ड्रोन खुफ़िया, निगरानी और टोही (ISR) अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे वास्तविक समय डेटा और स्थिति-जागरूकता प्रदान करते हैं।
- **असमान युद्ध का उपकरण :** ड्रोन असमान युद्ध का एक शक्तिशाली उपकरण बनकर उभरे हैं, जिससे अपेक्षाकृत कमजोर राष्ट्र और गैर-राज्यीय तत्व तकनीकी रूप से श्रेष्ठ विरोधियों को चुनौती दे सकते हैं।
- **रणनीतिक तर्क :** ड्रोन निर्माण में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना सामरिक स्वायत्तता और राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अत्यावश्यक है, विशेषकर भू-राजनीतिक संकटों के समय।

सरकारी पहल

- **ड्रोन नियम, 2021 :**ये नियम वाणिज्यिक उपयोग हेतु आवश्यक नियामक ढाँचा प्रदान करते हैं।
  - इनमें प्रकार प्रमाणन, ड्रोन का पंजीकरण एवं संचालन, वायुक्षेत्र प्रतिबंध, अनुसंधान, विकास एवं परीक्षण, प्रशिक्षण एवं लाइसेंसिंग, अपराध एवं दंड आदि पहलुओं को शामिल किया गया है।
- **ड्रोन एयरस्पेस मानचित्र, 2021:**इस मानचित्र ने भारतीय वायुक्षेत्र का लगभग 90% भाग ड्रोन उड़ानों के लिए ग्रीन ज़ोन घोषित किया है, जहाँ 400 फीट तक की उड़ान की अनुमति है।
- **उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजना:** इस योजना के अंतर्गत 120 करोड़ रुपये का प्रोत्साहन तीन वित्तीय वर्षों में दिया जाएगा। प्रोत्साहन दर तीन वर्षों में मूल्यवर्धन का 20% निर्धारित है।
- **ड्रोन प्रमाणन योजना, 2022 :** इस योजना ने ड्रोन निर्माताओं के लिए प्रकार प्रमाणपत्र प्राप्त करना सरल बना दिया है।

- **ड्रोन आयात नीति, 2022 :**इस नीति के अंतर्गत विदेशी ड्रोन के आयात पर प्रतिबंध लगाया गया है, जबकि ड्रोन घटकों के आयात को अनुमति दी गई है।
- **ड्रोन (संशोधन) नियम, 2022 :** इन नियमों ने ड्रोन पायलट लाइसेंस की आवश्यकता को समाप्त कर दिया है।
- **ड्रोन पर जीएसटी :**सितंबर 2025 में ड्रोन पर जीएसटी दर को घटाकर एक समान 5% कर दिया गया। पूर्व में लागू 18% और 28% की दरें समाप्त कर दी गईं। इस सरलीकृत कर व्यवस्था ने ड्रोन के व्यापक वाणिज्यिक एवं व्यक्तिगत उपयोग को समर्थन प्रदान किया।

मुख्य चुनौतियाँ

- **महत्वपूर्ण घटकों पर निर्भरता:** अर्धचालक, उच्च-रिज़ॉल्यूशन सेंसर, उन्नत प्रणोदन प्रणाली का आयात।
- **प्रौद्योगिकीय अंतराल:**
  - AI-आधारित स्वायत्त नेविगेशन
  - उन्नत सामग्री एवं सूक्ष्मीकरण तकनीक
  - सुरक्षित संचार एवं एंटी-जैमिंग प्रणाली
- **नियामक पारिस्थितिकी तंत्र:** परीक्षण, प्रमाणन और वायुक्षेत्र एकीकरण की अपर्याप्तता।

आगे की राह

- रक्षा नवाचार को प्रोत्साहन हेतु वित्तीय सहयोग, इनक्यूबेशन केंद्र और रक्षा गलियारे।
- खरीद प्रक्रियाओं का सरलीकरण और त्वरित निर्णय-निर्माण।
- उन्नत प्रतिरोधी-ड्रोन प्रणालियों में निवेश, जैसे इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और निर्देशित ऊर्जा हथियार।

निष्कर्ष

- आधुनिक युद्ध में ड्रोन की बढ़ती केंद्रीयता ने संघर्ष की प्रकृति को मूल रूप से बदल दिया है, जहाँ तकनीक सैन्य परिणामों का निर्णायक कारक बन गई है।
- भारत का ड्रोन निर्माण में आत्मनिर्भरता का प्रयास केवल आर्थिक उद्देश्य नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, तकनीकी संप्रभुता और दीर्घकालिक रक्षा तैयारी सुनिश्चित करने की रणनीतिक आवश्यकता है।

स्रोत: TH

भारत की जैव-अर्थव्यवस्था(BioEconomy) 2030 तक 300 अरब डॉलर के लक्ष्य की ओर अग्रसर

संदर्भ

- केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत की जैव-अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो 2014 में लगभग 10 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2025 में 195 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गई है। यह भारत के तीव्र गति से उभरते वैश्विक जैव-प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में महत्व को रेखांकित करता है।

जैव-अर्थव्यवस्था क्या है?

- जैव-अर्थव्यवस्था एक ज्ञान-आधारित उत्पादन प्रणाली है, जिसमें जैविक संसाधनों का उपयोग करके उत्पाद, प्रक्रियाएँ और सेवाएँ सभी आर्थिक क्षेत्रों में एक सतत आर्थिक ढाँचे के अंतर्गत प्रदान की जाती हैं।
- यह कृषि, वानिकी, मत्स्य, खाद्य उत्पादन, जैव-प्रौद्योगिकी और जैव-ऊर्जा जैसे क्षेत्रों को समाहित करती है।
- **भारत में जैव-अर्थव्यवस्था के उप-क्षेत्र :**
  - **बायोफार्मा/बायोमेडिकल :** औषधियों, चिकित्सा उपकरणों और प्रयोगशाला में विकसित अंगों जैसे चिकित्सा उत्पादों एवं सेवाओं का विकास और उत्पादन।
  - **बायोएग्री :** आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें एवं पशु, सटीक कृषि तकनीकें और जैव-आधारित उत्पाद। उदाहरण: बीटी कपास।
  - **बायोइंडस्ट्रियल :** एंजाइम, जैव-संश्लेषण मार्ग और पुनः संयोजित डीएनए तकनीक का उपयोग कर जैव-आधारित रसायन एवं उत्पादों का विकास और उत्पादन।
- **भारत की जैव-अर्थव्यवस्था की विकास यात्रा:** भारत की जैव-अर्थव्यवस्था ने एक दशक में लगभग 20 गुना विस्तार किया है, जो जैव-प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सुदृढ़ संरचनात्मक वृद्धि को दर्शाता है।
  - भारत एशिया-प्रशांत क्षेत्र में तीसरे और वैश्विक स्तर पर 12वें स्थान पर है।
  - वर्तमान में यह भारत की जीडीपी में लगभग 5% का योगदान करती है।

- चार प्रमुख उप-क्षेत्र:
  - बायोइंडस्ट्रियल – 47%
  - बायोफार्मा – 35%
  - बायोएग्री – 8%
  - बायो रिसर्च – 9%

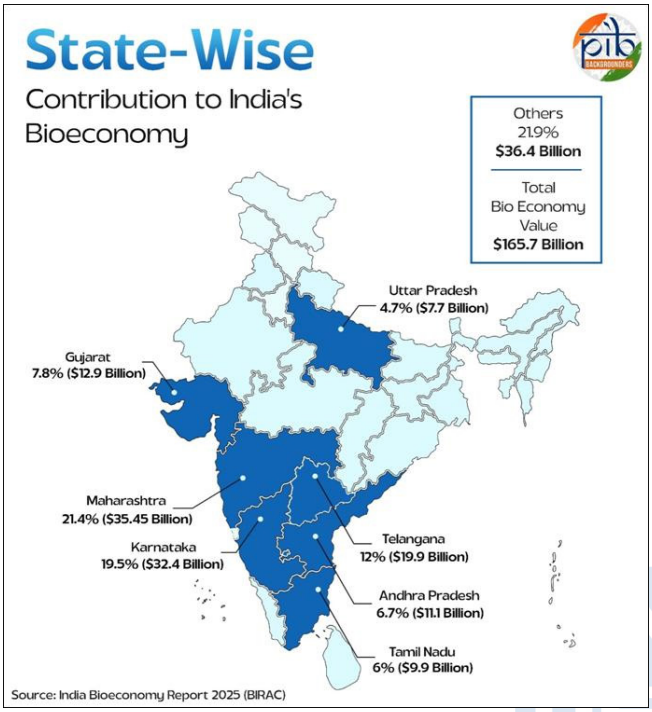

मुख्य सरकारी पहल

- **बायोE3 नीति (BioE3 Policy):** सतत जैव-निर्माण और जैव-आधारित उद्योगों को बढ़ावा।
  - प्रमुख क्षेत्र: स्मार्ट प्रोटीन, सटीक उपचार, जलवायु-सहिष्णु कृषि।
- **अनुसंधान, विकास एवं नवाचार (RDI) कोष:** 1 लाख करोड़ रुपये का कोष, गहन-प्रौद्योगिकी नवाचार और स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने हेतु।
- **स्टार्टअप एवं इनक्यूबेशन समर्थन:** भारत में जैव-प्रौद्योगिकी क्लस्टर और नवाचार केंद्रों को सुदृढ़ करना।
- **समावेशी प्रतिभा विकास:** द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के शहरों, महिला उद्यमियों और युवा शोधकर्ताओं पर विशेष ध्यान।

भारत की जैव-अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ

- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा :** भारत की जैव-अर्थव्यवस्था को अमेरिका, यूरोपीय संघ और चीन जैसे देशों की अधिक विकसित जैव-अर्थव्यवस्थाओं से सख्त प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जिनके पास उन्नत अवसंरचना, वित्तीय संसाधन और अनुसंधान एवं विकास क्षमताएँ उपलब्ध हैं।
- **बौद्धिक संपदा संरक्षण :**जैव-प्रौद्योगिकी क्षेत्र में बौद्धिक संपदा की सुरक्षा चुनौतीपूर्ण है, जिससे नवाचार चोरी की आशंका और अनुसंधान के लिए प्रोत्साहन की कमी उत्पन्न होती है।
- **अवसंरचना की कमी :** जैव-प्रौद्योगिकी नवाचारों के अनुसंधान, विकास और व्यावसायीकरण हेतु पर्याप्त अवसंरचना का अभाव है।
- **ब्रेन ड्रेन :** प्रतिभाशाली वैज्ञानिक और शोधकर्ता बेहतर अवसरों की तलाश में विदेश चले जाते हैं, जिससे भारत की नवाचार क्षमता में कमी आती है।

आगे की राह

- **नियामक ढाँचे को सुदृढ़ करना:** अनुमोदन प्रक्रियाओं का सरलीकरण, जैव-सुरक्षा और नैतिक अनुपालन सुनिश्चित करना।
- **गहन-प्रौद्योगिकी वित्तपोषण का विस्तार:** उच्च जोखिम एवं उच्च लाभ वाले नवाचारों हेतु RDI कोष का प्रभावी उपयोग।
- **वैश्विक एकीकरण का विस्तार:** भारत को जैव-निर्माण और जैव-निर्यात का वैश्विक केंद्र बनाना।
- **क्षमता निर्माण:** उन्नत कौशल विकास में निवेश, विशेषकर सिंथेटिक बायोलॉजी और बायोइन्फ़ॉर्मेटिक्स जैसी अग्रणी तकनीकों में।

स्रोत: DD News

भारत का खेल उपकरण निर्माण क्षेत्र

संदर्भ

- नीति आयोग ने "भारत के खेल उपकरण निर्माण क्षेत्र की निर्यात क्षमता का साकार करना" शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की है, जिसमें भारत की विनिर्माण क्षमताओं और वैश्विक बाज़ार अवसरों का व्यापक आकलन प्रस्तुत किया गया है।

वैश्विक बाज़ार अवसर

- वैश्विक खेल वस्त्र बाज़ार, जिसमें खेल परिधान, जूते, उपकरण और सहायक सामग्री शामिल हैं, का मूल्य 2024 में लगभग 700 अरब अमेरिकी डॉलर था तथा 2036 तक इसके 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक होने का अनुमान है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में केवल खेल उपकरण खंड का मूल्य लगभग 140 अरब अमेरिकी डॉलर है, जिसकी वैश्विक मांग 2036 तक लगभग 283 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने की संभावना है।

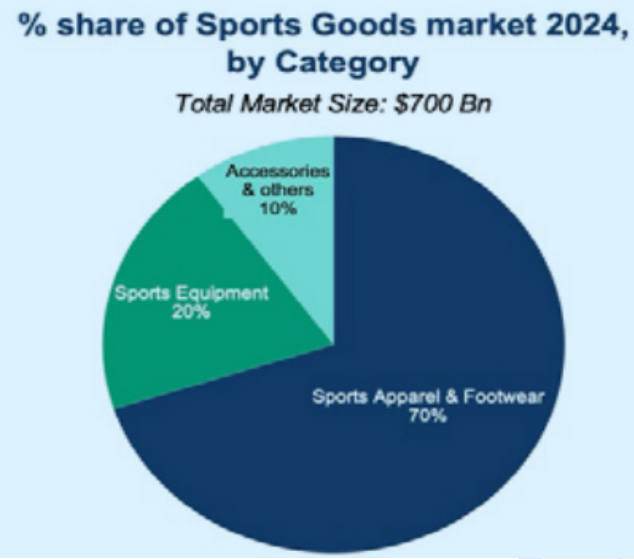

भारत की स्थिति

- भारत का घरेलू खेल वस्त्र बाज़ार लगभग 2.5 अरब अमेरिकी डॉलर आंका गया है, जिसमें खेल उपकरण का हिस्सा लगभग 0.5 अरब अमेरिकी डॉलर है। यह घरेलू उत्पादन और निर्यात दोनों में विस्तार की पर्याप्त संभावनाएँ दर्शाता है।

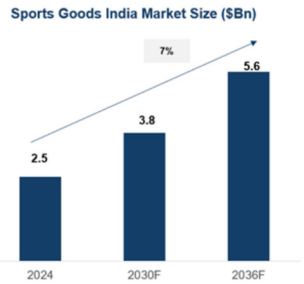

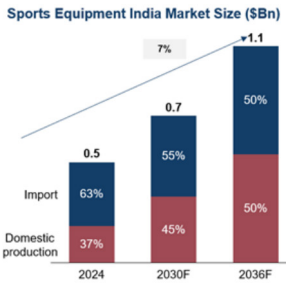

- भारत वर्तमान में प्रतिवर्ष लगभग 275 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के खेल उपकरण का निर्यात करता है, जो वैश्विक निर्यात बाज़ार का लगभग 0.5% है।
- विनिर्माण गतिविधियाँ मुख्यतः जालंधर (पंजाब) और मेरठ (उत्तर प्रदेश) जैसे स्थापित क्लस्टरों में केंद्रित हैं, जिन्हें निर्यातकों, घरेलू विनिर्माण इकाइयों एवं हजारों सूक्ष्म उद्यमों के नेटवर्क का समर्थन प्राप्त है।
- यह क्षेत्र मुख्यतः एमएसएमई-आधारित है, जहाँ लगभग 90% उत्पादन छोटे और सूक्ष्म उद्यमों द्वारा किया जाता है।

निर्यात प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करने वाली प्रमुख चुनौतियाँ

- कार्बन फाइबर, ईवीए फोम और पॉलीयूरेथेन जैसी महत्वपूर्ण कच्ची सामग्रियों पर उच्च सीमा शुल्क।
- अंतर्राष्ट्रीय खेल मानकों को पूरा करने हेतु उच्च प्रमाणन लागत।
- लॉजिस्टिक अक्षमताएँ और अधिक इनपुट लागत।
- उन्नत विनिर्माण तकनीकों तक सीमित पहुँच।
- वैश्विक खेल ब्रांडों और खरीद पारिस्थितिकी तंत्र से कमजोर संबंध।
- भारतीय खेल उपकरण की सीमित वैश्विक दृश्यता और ब्रांडिंग।

खेल उपकरण निर्यात को बढ़ावा देने हेतु नीति सिफ़ारिशें

- **लागत प्रतिस्पर्धा:** कार्बन फाइबर, ईवीए फोम और पॉलीयूरेथेन जैसी महत्वपूर्ण कच्ची सामग्रियों पर आयात शुल्क का युक्तिकरण कर इनपुट लागत कम करना।
- **एमएसएमई पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करना:** लक्षित वित्तीय सहयोग, ऋण पहुँच और तकनीकी उन्नयन योजनाओं का विस्तार।
- **क्लस्टर-आधारित विनिर्माण विकास:** बंदरगाह-निकट नए ग्रीनफ़ील्ड क्लस्टरों का विकास कर लॉजिस्टिक लागत कम करना और निर्यात दक्षता बढ़ाना।
- **नवाचार केंद्र:** अकादमिक जगत और उद्योग के सहयोग से समर्पित खेल प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र स्थापित करना।
- **गुणवत्ता मानक:** अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करने हेतु विश्वस्तरीय परीक्षण और प्रमाणन सुविधाओं की स्थापना।

निष्कर्ष

- भारत को एक समग्र पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिसमें लागत प्रतिस्पर्धा, गुणवत्ता संवर्धन और वैश्विक एकीकरण का संयोजन हो।
- निरंतर नीति समर्थन के साथ, भारत एक निम्न-हिस्सेदारी वाले निर्यातक से खेल उपकरण निर्माण में वैश्विक अग्रणी बनने की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

स्रोत: PIB

संक्षिप्त समाचार

साउथ पार्स(South Pars) और रस लाफ़ान(Ras Laffan)

संदर्भ

- हाल ही में साउथ पार्स और रस लाफ़ान पर हुए हमलों ने फारस की खाड़ी में तनाव को बढ़ा दिया है और वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा को लेकर चिंताएँ गहरा दी हैं।

साउथ पार्स गैस क्षेत्र

- फारस की खाड़ी में, ईरान के दक्षिणी तट से सटा हुआ।
- विश्व के सबसे बड़े प्राकृतिक गैस क्षेत्र का हिस्सा, जिसे क़तर के साथ साझा किया जाता है (क़तर की ओर इसे नॉर्थ डोम कहा जाता है)।
- ईरान के प्राकृतिक गैस उत्पादन का लगभग 70% हिस्सा यहीं से आता है।

रस लाफ़ान औद्योगिक नगर

- क़तर में, फारस की खाड़ी के तट पर स्थित।
- विश्व के सबसे बड़े एलएनजी (Liquefied Natural Gas) निर्यात केंद्रों में से एक।
- सामान्य परिस्थितियों में, विश्व के लगभग पाँचवें हिस्से का एलएनजी निर्यात केवल इसी परिसर से होता है।

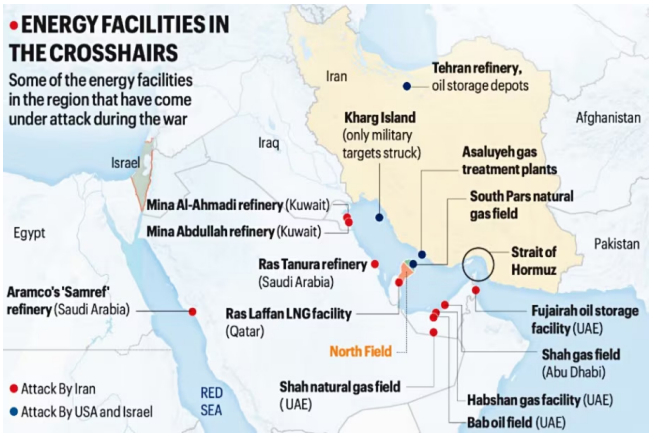

स्रोत: IE

लचीलापन एवं निर्यात सुविधा हेतु लॉजिस्टिक्स हस्तक्षेप (RELIEF) योजना

समाचार में

- पश्चिम एशिया संकट के कारण प्रभावित निर्यातकों को सहयोग देने हेतु केंद्र सरकार ने RELIEF योजना शुरू की है।

परिचय

- यह योजना उन निर्यातकों को क्रेडिट बीमा कवर (निर्यात हानि के विरुद्ध वित्तीय सुरक्षा) प्रदान करती है जिनका निर्यात माल फंसा हुआ हैं या जोखिम में हैं।
- बीमा प्रीमियम को संघर्ष-पूर्व दरों पर सुनिश्चित करती है, जिससे वित्तीय भार कम होता है, विशेषकर एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) पर ध्यान केंद्रित।
- इसे भारतीय निर्यात क्रेडिट गारंटी निगम (ECGC) के माध्यम से लागू किया जाता है, जो युद्ध और राजनीतिक जोखिमों के विरुद्ध 95–100% तक हानि कवरेज प्रदान करता है।

भारतीय निर्यात क्रेडिट गारंटी निगम

- ईसीजीसी लिमिटेड भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्व में है, जिसकी स्थापना 1957 में हुई।
- **उद्देश्य:** देश से निर्यात को बढ़ावा देना, क्रेडिट जोखिम बीमा प्रदान करके।
- यह वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है।

स्रोत: TH

लघु जलविद्त विकास योजना

समाचार में

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 2026–31 के लिए लघु जलविद्युत विकास योजना को स्वीकृति दी है, जिसका उद्देश्य स्वच्छ ऊर्जा (कम-उत्सर्जन नवीकरणीय ऊर्जा) और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना है।

लघु जलविद्त (SHP) के बारे में

मुख्य विशेषताएँ :

- **अवधि एवं क्षमता:** वित्तीय वर्ष 2026–27 से 2030–31 तक, ₹2,584.6 करोड़ की लागत से ~1500 मेगावाट क्षमता का विकास।
- **निवेश एवं रोजगार:** लगभग ₹15,000 करोड़ निवेश आकर्षित करने और ~51 लाख मानव-दिवस रोजगार सृजित करने की संभावना, विशेषकर पूर्वोत्तर और पहाड़ी क्षेत्रों में।
- **वित्तीय सहायता:**
  - **पूर्वोत्तर एवं सीमा क्षेत्र:** ₹3.6 करोड़/मेगावाट या 30% लागत (अधिकतम ₹30 करोड़/परियोजना)।
  - **अन्य राज्य:** ₹2.4 करोड़/मेगावाट या 20% लागत (अधिकतम ₹20 करोड़/परियोजना)।

स्रोत: TH

विश्व खुशी रिपोर्ट 2026

संदर्भ

- विश्व खुशी रिपोर्ट 2026 में यह रेखांकित किया गया है कि अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग कई देशों में युवाओं के कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है।

परिचय

- यह वार्षिक रिपोर्ट ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के वेलबीइंग रिसर्च सेंटर द्वारा गैलप और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क के सहयोग से प्रकाशित की जाती है।
- **खुशी रैंकिंग के मूल्यांकन हेतु छह कारक:**
  - प्रति व्यक्ति जीडीपी
  - जीवन प्रत्याशा
  - सामाजिक सहयोग
  - जीवन विकल्प चुनने की स्वतंत्रता
  - उदारता
  - भ्रष्टाचार की धारणा
- शीर्ष 3 देश :
  - फ़िनलैंड (2018 से लगातार प्रथम स्थान)
  - आइसलैंड
  - डेनमार्क
- निचले 3 देश:
  - 145वाँ – मलावी
  - 146वाँ – सिएरा लियोन
  - 147वाँ – अफ़ग़ानिस्तान
- भारत : भारत 116वें स्थान पर रहा है (2025 में 118वें स्थान से सुधार)।

क्या आप जानते हैं?

- 2026 की रैंकिंग लगातार दूसरे वर्ष यह दर्शाती है कि कोई भी अंग्रेज़ी-भाषी देश शीर्ष 10 में शामिल नहीं है।
  - संयुक्त राज्य अमेरिका – 23वाँ स्थान
  - कनाडा – 25वाँ स्थान
  - ब्रिटेन – 29वाँ स्थान

स्रोत: IE